International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 364-366

राजी जनजाति में शिक्षा एवम् उनके शैक्षिक विकास में सरकारी एवम् गैर–सरकारी संस्थाओं की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० दर्शना पन्त
असि० प्रो०, समाजशास्त्र विभाग, राज० स्नात० महा० बाजपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड, भारत।

प्रस्तावना

राजी जनजाति उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ में स्थित, धारचूला, डीडीहाट, कनालीछीना व जनपद चम्पावत में निवास करती है। जनपद पिथौरागढ़ में इनके गाँवों की संख्या 09 है जो इस प्रकार है, किमखोला, गणा गाँव, औलतडी, मदनपुरी, भगतिरवा, कट्यूला, जमतडी, कूटाच्यौरानी, चिफलतड़ा है और जनपद चम्पावत मे राजियों का केवल एक गाँव खिरद्वारी है, उत्तरांचल राज्य की एकमात्र आदिम जाति बनराजी, या राजी, प्राचीन किरातों के वंशवृक्ष माने जाते है जो हिमालयी क्षेत्र में कोल व खस जातियों के आगमन से पूर्व प्रभावशाली रूप में स्थापित थी।[1] सरकार द्वारा 1975 में राजी जनजाति को आदिम जनजाति घोषित किया गया।[2]

प्रस्तुत शोध पत्र में राजी जनजाति में शिक्षा के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है। ''राजी'' जो उत्तराखण्ड की अल्पसंख्यक अनुसूचित जनजाति है, आज भी उसकी स्थिति दयनीय है। 1947 में जब देश स्वतन्त्र हुआ भारतीय समाज के विकास के लिए अनेक योजनाएँ तैयार हुई, जनसामान्य के लिए अलग और पिछड़े वर्गो व अत्यन्त पिछड़ी हुई जातियाँ व जनजातियों के लिए अलग, लेकिन आज भी यह जनजाति अत्यन्त पिछड़ी हुई है, जो एक सोचनीय विषय है। सामान्य रूप से किसी भी समुदाय, जाति अथवा समूह के आगे बढ़ने के लिए शिक्षा का होना अति आवश्यक है।

मानव द्वारा आदिकाल से ही ज्ञान का संचय किया जाता रहा है। प्रत्येक नयी पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी द्वारा कुछ ज्ञान विरासत में मिल जाता है और कुछ ज्ञान उसे अर्जित करना पड़ता है। ज्ञान भी यह परम्परात्मक श्रृंखला ही, शिक्षा है, जिसके द्वारा मानव ने अपनी मानसिक, अध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है। शिक्षा ने ही मानव को पशु–स्तर से ऊँचा उठाया है और श्रेष्ठ सांस्कृतिक प्राणी बनाया है।[3]

शोध क्षेत्र

शोध क्षेत्र के रूप में जनपद पिथौरागढ़ में निवास करने वाली राजी जनजाति को ही हमने अध्ययन हेतु चुना है।

शोध क्षेत्र

जनपद पिथौरागढ़

- **तहसील धारचूला**
  - ग्राम–गणा गाँव
  - ग्राम– भगतिरवा
  - ग्राम– किमखोल
  - ग्राम– चिफलतरा
- **तहसील डीडीहाट**

  डीडीहाट
  - ग्राम– कूटाचौरानी
  - ग्राम– कट्यूला,
  - ग्राम– मदनपुरी,

  कनालीछीना
  - ग्राम– जमतड़ी
  - ग्राम– औलतडी

इसके अन्तर्गत राजी के 09 गाँवों में जहाँ कुल जनसंख्या 556 है (260 महिलाएँ + 296 पुरुष) को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना है। जिसमें राजी जनजाति के 09 गाँवों के 138 परिवारों के मुखियाओं को ही केवल अध्ययन में शामिल किया गया है।

शोध–प्रारूप

अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया गया है। शोध प्राथमिक एवम् द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार, अवलोकन, अनुसूची, साक्षात्कार अनुसूची को आधार बनाया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत् रखते हुए अध्ययन में वर्णात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों हेतु पुस्तकालय, शासकीय प्रतिवेदन, समाचार पत्र व पत्रिकाएँ इण्टरनेट, संचालित योजनाओं से सम्बन्धी शोध, आदि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. राजी जनजाति में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. शिक्षा प्राप्त करने में भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों का अध्ययन करना।
3. जनजाति के शैक्षिक विकास में सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के योगदान का अध्ययन करना।
4. जनजाति के शैक्षिक विकास हेतु सूचनादाताओं से सुझाव होना।

उपकल्पना

1. राजी जनजाति के लोग अपनी सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति में बदलाव के लिए शिक्षा ग्रहण करना चाहते है।
2. शिक्षा संस्थाओं से गाँवों की दूरी राजी जनजाति के बच्चों के लिए एक समस्या है।
3. वर्तमान में राजी जनजाति में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

राजी जनजाति अपने आपसी व्यवहार में अपनी ही बोली का प्रयोग करती है यद्यपि वे हिन्दी व कुमाँऊनी स्थानीय बोली को भी खूब समझ व बोल लेते हैं लेकिन राजी बच्चों को अपनी बोली से भिन्न बोली बोलने में कठिनाई होती है।[4]

राजी बोली को प्रदर्शित करती सारणी
दिनों के नाम[5]

सारणी 1

क्र0 सं0	राजी	कुमय्याँ	हिन्दी
01	दे	ऐत्वार	रविवार
02	किलेक	सोमवार	सोमवार
03	नीव	मंगल	मंगलवार
04	कुंव	बुध	बुधवार
05	बीपै	बीपैं	वृहस्पतिवार
06	शुक्र	शुक्क	शुक्रवार
07	छंजर	छंजर	शनिवार

पृ0सं0–04

सारणी 2: विभिन्न शिक्षा संस्थाओं की गाँवों से दूरी[6]

क्र0सं0	गाँव का नाम	पूर्व प्राथमिक/ प्राथमिक विद्यालय की दूरी	पूर्व माध्यमिक विद्यालय की दूरी	हाईस्कूल/इण्टर कॉलेज की दूरी
01	औलतड़ी	2 कि0मी0	4 कि0मी0	8 कि0मी0
02	चिफलतड़ा	2.5 कि0मी0	6 कि0मी0	9 कि0मी0
03	गणॉगाँव	4 कि0मी0	4 कि0मी0	4 कि0मी0
04	जमतड़ी	1 कि0मी0	4 कि0मी0	4 कि0मी0
05	कट्यूला	2 कि0मी0	6 कि0मी0	9 कि0मी0
06	किमरवोला	1.5 कि0मी0	6 कि0मी0	6 कि0मी0
07	कुटाचौरानी	2 कि0मी0	8 कि0मी0	6 कि0मी0
08	मदनपुरी	1 कि0मी0	4 कि0मी0	7 कि0मी0
09	फाँफू	2 कि0मी0	2 कि0मी0	2 कि0मी0 (वर्तमान में फाँफू गाँव के लोग भगतिरवा गाँव में निवास कर रहे है।)

कोई भी जनजातीय समुदाय जो अपने शैक्षणिक विकास के प्रथम चरण में होता है। वहाँ की शिक्षा के विकास में शिक्षा संस्थाओं की दूरी का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षा संस्थाएँ उनके गाँवों में उपलब्ध होती है तो स्वाभाविक है कि शिक्षा लेने वालों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होगी, यदि शिक्षा संस्थाएँ गाँव से दूर हो तो शिक्षा लेने वालों की संख्या उतनी अधिक नही होगी जितनी की अपेक्षा की जाती है। सरकार सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत भी सभी अभिभावकों को प्रेरित कर रही है कि वे अपने–अपने बच्चों को स्कूल भेजें। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांश राजी गावों से विद्यालयों की दूरी काफी अधिक है जिससे इस जनजाति के बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है।

सारणी 3: बच्चों की शिक्षा के उद्देश्य को प्रदर्शित करती सारणी

क्र0सं0	आपका अपने बच्चों को पढ़ाने का उद्देश्य क्या है?	आवृत्ति	प्रतिशत
01	केवल साक्षर करने हेतु	11	7.97
02	रोजगार प्राप्त करने हेतु	70	50.73
03	पढ़–लिख कर समाज का प्रतिनिधित्व करने हेतु	05	3.63
04	समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु	07	5.07
05	ऐसे उत्तर दाता जिनके बच्चे विद्यालय नही जाते	45	32.60
	योग	**138**	**100.00**

शिक्षा के प्रति इस जनजाति का उद्देश्य क्या है अर्थात यह जनजाति अपने बच्चों को शिक्षा क्यों देना चाहती है इसको जानने के लिए जब इनका साक्षात्कार लिया गया तो सर्वाधिक 50.73 प्रतिशत सूचनादाताओं का विचार था कि हम अपने बच्चों को रोजगार प्राप्त करने के लिए शिक्षा दिलवा रहे है। आज हम शिक्षा के आर्दशात्मक पहलू पर जितना भी विचार प्रस्तुत करें लेकिन अन्तोगत्वा सभी समाजों में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य रोजगार ही है। अध्ययन के दौरान ज्ञात हुआ कि अभी तक राजी समुदाय के मात्र चार सदस्य ही चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में कार्य कर रहे है, इससे स्पष्ट है कि इस समुदाय में बेरोजगारी और गरीबी ही सबसे बड़ी समस्या है और इसे रोजगार पाकर ही दूर किया जा सकता है। थोड़े से (7.97 प्रतिशत) सूचनादाता अपने बच्चों को केवल साक्षर ही बनाने के पक्ष में है जिससे वे पढ़ना–लिखना सीख जायें। शिक्षा को समाज में प्रतिष्ठा का भी प्रतीक माना जाता है इस

कारण कुछ लोग प्रतिष्ठा एवम् समाज के नेतृत्व के लिए भी अपने बच्चों को शिक्षा देना चाहते है। अध्ययन के दौरान यह ज्ञात हुआ है कि सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के

पश्चयात् राजी जनजाति के सदस्य शिक्षा के महत्व को समझने लगे है। एक सूचनादाता के अनुसार 'पढ़ा–लिखा व्यक्ति ही समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। यह विचार शिक्षा के प्रति इनमें जागरुकता को परिलक्षित करता है।

सारणी 4: साक्षात्कार में सम्मिलित साक्षर मुखियाओं की संख्या

क्र0सं0	गाँव का नाम	साक्षर	निरक्षर
01	गणा गाँव	04	14
02	भगतिरवा	01	10
03	किमखोला	13	16
04	औलतड़ी	04	09
05	म्दनपुरी	02	08
06	कट्यूला	01	03
07	चिफलतरा	04	08
08	कूटाचौरानी	03	15
09	जमतड़ी	09	14
	योग	**41**	**97**

अध्ययन में केवल परिवारों के मुखियाओं को ही सम्मिलित किया गया है जिनमें से अधिकांश परिवारों के मुखिया अशिक्षित है। साक्षात्कार के दौरान 29.71 प्रतिशत मुखिया ही साक्षर पाये गये।

सारणी 5: शैक्षिक विकास हेतु सूचनादाओं के सुझाव

क्र0सं0	आपकी जनजाति के शैक्षिक विकास के लिए सरकार को क्या करना चाहिए?	आवृत्ति	प्रतिशत
01	निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था करनी चाहिए	40	28.98
02	राजी ग्रामों में विद्यालय खोलने चाहिए	38	27.53
03	प्रत्येक गाँव को शैक्षिक विकास हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए	60	43.47
	योग	**138**	**100.00**

अध्ययन के दौरान जब यह जानने का प्रयास किया गया कि आपके क्षेत्र में शिक्षा के उत्थान के लिए जो प्रयास किये जा रहे है, उसे और अधिक गति प्रदान करने के लिए आपके क्या सुझाव हो सकते है। अपने–अपने ज्ञान एवं जागरूकता के आधार पर सभी सूचनादाताओं ने कुछ न सुझाव दिये। अधिकांश (43.47 प्रतिशत) सूचनादाता अपनी दयनीय स्थिति के कारण आर्थिक सहायता की माँग कर रहे थे। 29.71 प्रतिशत लोगों द्वारा गाँवों में विद्यालय खोलने की बात कही गयी और शेष 28.26 प्रतिशत लोगों द्वारा निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था के विषय में अपने–अपने सुझाव दिये।

सारणी 6: गैर–सरकारी संख्याओं के योगदान से सम्बन्धित ज्ञान

क्या आपकी जनजाति में शिक्षा के विकास में गैर सरकारी संस्थाओं का योगदान रहा है?	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	120	86.95
जानकारी नहीं	18	13.04
	138	**100.00**

अध्ययन के दौरान 86.05 प्रतिशत लोगों को इस विषय की जानकारी थी और 13.04 प्रतिशत लोग इस जानकारी से अनभिज्ञ पाये गये, परन्तु अध्ययन के दौरान एक जानकारी भी प्राप्त हुई कि वर्ष 2001 में राजी आदिम जनजाति ''आवासीय विद्यालय जौलजीवी'' जो इस जनजाति के बच्चों के लिए चलाया जा रहा था यह आवासीय विद्यालय बंद हो गया है। सरकारों की उदासीनता के चलते भारी वित्तीय घाटे में आयी संस्था को विद्यालय संचालन बन्द करना पड़ा है। विद्यालय का संचालन सीमांत अनुसूचित एवं जनजाति सेवा संस्थान कर रहा था।[7]

निष्कर्ष एवम् सुझाव

राजी जनजाति में शिक्षा के विकास में सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के योगदान का अध्ययन करने पर यह कहा जा रहा सकता है कि वर्तमान में इस जनजाति के सदस्य भी शिक्षा के महत्व को समझने लगे है और बच्चों को विद्यालय भेज रहे हैं लेकिन लगभग 32.61 प्रतिशत बच्चे आज भी शिक्षा से वंचित हैं, इससे पीछे अशिक्षा, आर्थिक कारण व गाँवों की विद्यालयों से दूरी, शिक्षा के प्रति उदासीनता, जागरुकता की कमी, बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उदासीनता आदि कारण दृष्टिगोचर हुए।

जनजाति हेतु शैक्षिक सुझाव

1. सरकार को छोटे बच्चों के लिए विद्यालय गाँवों मे ही खोलने चाहिए और उन्हीं गाँवों के कुछ शिक्षित लोगों को उसमें पढ़ाने हेतु रखना चाहिए। (3 से 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए)
2. सभी राजी गाँवों में प्राथमिक व पूर्व प्राथमिक विद्यालय खोले जाने चाहिए ताकि गाँवों से विद्यालयों की दूरी उनकी शिक्षा में बाधक न बने।
3. बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष आर्थिक सहायता देनी चाहिए।
4. जनजाति के प्रत्येक गाँव में शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि अधिक से अधिक संख्या में जनजाति के लोग विद्यालयों में पढ़ने हेतु जायें।

सन्दर्भ

1. सिंह डॉ0 राम – ''आज का पहाड़'' नवम्बर 2001 पृ018।
2. मुनौला एम0एस0 – शोध प्रबन्ध ''ब्रिटिश कालीन कूमायूँ का इतिहास''।
3. गुप्ता एम0एल0, शर्मा डी0डी0 – समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 846।
4. ''आज का पहाड़'' – त्रैमासिक पत्रिका, फरवरी 2002 पृ0सं0 21।
5. पाण्डे बद्रीदत्त, 'कुमाऊँ का इतिहास', पृ0सं0 23।
6. डाइट सर्वेक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़, शैक्षिक सर्वेक्षण, 2002, पृ0सं0 17।
7. उत्तरांचल टुडे, उत्तराखण्ड, 2 सितम्बर, 2017।